इकाई 31 राष्ट्रवाद और सामाजिक क्रांति : एक अवलोकन

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य
31.1 प्रस्तावना
31.2 राष्ट्रीय आंदोलन, समाजवाद और सामाजिक-क्रांति : एक अवलोकन
  31.2.1 जवाहरलाल नेहरू
  31.2.2 सुभाष चंद्र बोस
  31.2.3 समाजवादी
31.3 मार्क्सवाद, समाजवाद और सामाजिक-क्रांति : एक अवलोकन
  31.3.1 कम्युनिस्ट
  31.3.2 एम.एन. रॉय
31.4 सारांश
31.5 शब्दावली
31.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें
31.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

31.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम सामाजिक क्रांति की समाजवादी और कम्युनिस्ट अवधारणाओं पर चर्चा करेंगे। सामाजिक-क्रांति को मुद्दा बनाने वाली दोनों ही धाराएं, राष्ट्रीय आंदोलन की उपज होने के नाते उससे प्रभावित थीं। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न बातें समझ सकेंगे :

- दो धाराओं के प्रतिनिधियों के विचारों में अंतर
- एक ही धारा के विभिन्न प्रद्विनिधियों के विचारों में अंतर, और
- इन विचारों का आजादी की लड़ाई में योगदान।

31.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में जवाहरलाल नेहरू, सुभाष बोस, जयप्रकाश नारायण आदि चिंतकों के विचारों के अलावा कम्युनिस्ट पार्टी और एम.एन. रॉय की राष्ट्रीय आंदोलन की विभिन्न अवधारणाओं पर चर्चा की गई है। राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक-क्रांति के अंत:संबंधों की एक व्यापक समझ विकसित करने में इनका तुलनात्मक अध्ययन मददगार साबित होगा।

गौर तलब है कि ये सभी विचारक साम्राज्य विरोधी थे और समाजवादी आदर्शों पर एक आधुनिक स्वतंत्र भारत का निर्माण करना चाहते थे। सरोकार की इस समानता के बावजूद समाजवाद की समझ में मतभेदों के चलते अंग्रेजी राज के विकल्प की उनकी अवधारणाएं एक दूसरे से भिन्न थीं। यह इकाई इन विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन है।

31.2 राष्ट्रीय आंदोलन, समाजवाद और सामाजिक क्रांति : एक अवलोकन

राष्ट्रीय आंदोलन में समाजवादी धारा का प्रतिनिधित्व प्रमुख रूप से, जवाहरलाल नेहरू, आचार्य नरेंद्र देव. जयप्रकाश नारायण एवं कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी के अन्य चिंतक करते हैं।

ये विचारक, गैर-बराबरी, शोषण और अन्याय समाप्त करने वाले समाजवादी नैतिकता के आदर्शों से प्रभावित थे। लेकिन इनकी वरीयता क्रम में अहिंसक राष्ट्रीय आंदोलन सर्वोपरि था और ये रूसी क्रांति के हिंसक तरीकों के हिमायती नहीं थे। वे भारतीय राष्ट्रवाद के ही परिप्रेक्ष्य में भारत में समाजवादी समाज की रचना करना चाहते थे। वे हिंदू पुनरुत्थानवाद के विरोधी थे और धर्मनिरपेक्ष भारतीय राष्ट्रवाद के वैचारिक ढांचे में समाजवाद की उनकी समझ विकसित हुई।

31.2.1 जवाहरलाल नेहरू

सामाजिक परिवर्तन की नेहरू की समझ का आधार, भारतीय समाज के आधुनिकीकरण का उनका धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। नेहरू के समक्ष आधुनिकीकरण के दो ढांचे थे : पश्चिमी देशों का मुक्त-बाजार अर्थव्यवस्था वाला पूंजीवादी ढांचा और सोवियत संघ का नियोजित अर्थव्यवस्था वाला सामाजिक ढांचा। नेहरू के विचार अनुसार, दोनों ही ढांचो में कुछ-न-कुछ कमियां थीं। पाश्चात्य पूंजीवादी ढांचा उन्हें इसलिए स्वीकार्य नहीं था कि यह गैर-बराबरी और शोषण के अमानवीय मूल्यों पर आधारित है। वे सोवियत संघ के समाजवादी ढांचे में नियोजित अर्थव्यवस्था के प्रशंसक थे। सोवियत संघ की समाजवादी आर्थिक नीतियों से अत्यधिक प्रभावित थे और उनका मानना था कि शोषण, अन्याय और असमानता के शिकंजे से देश की मुक्ति के लिए समाजवाद ही एकमात्र विकल्प था। 1936 के लखनऊ कांग्रेस में उनका अध्यक्षीय भाषण उनकी समाजवादी रुझान का परिचायक है। लेकिन सोवियत संघ में समाजवादी पुनर्रचना में इस्तेमाल हो रहे तरीकों के वे हिमायती नहीं थे। वे एक ही दल द्वारा सत्ता के केंद्रीकरण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों पर प्रतिबंध के भी विरोधी थे। शोषण की व्यवस्था खत्म करने के लिए वे सशस्त्र क्रांति और वर्ग-संघर्ष को आवश्यक नहीं मानते थे।

मोटे तौर पर, समाजवाद की उनकी अवधारणा निजी उपक्रमों पर सीमित सार्वजनिक नियंत्रण, नियोजित अर्थनीति, बहुलतावाद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मूल्यों पर आधारित थी। समाजवाद की उनकी यह अवधारणा राष्ट्रवादी ढांचे में जनतांत्रिक समाजवाद के फेबियन आदर्शों से प्रभावित थी। नेहरू, पारस्परिक सहयोग, शांतिपूर्ण विकास और धार्मिक सहिष्णुता जैसे परंपरागत मूल्यों के आधार पर समाजवादी समाज का निर्माण करना चाहते थे किंतु राष्ट्रवाद की उनकी समझ हिंदू पुनरुत्थानवादी राष्ट्रवाद का विरोधी था।

असमानता को दूर किए बिना, नेहरू न्याय पर आधारित शोषण मुक्त समाज की रचना करना चाहते थे। साथ ही, छोटे-बड़े गरीब-अमीर सभी के वैयक्तिक अधिकारों और आजादी के हिमायती भी थे। यह एक ऐसा मानवतावाद है जो गैर-बराबरी खत्म किए बिना, शोषित और शोषक में पारस्परिक सहयोग का उपदेश देता है जिस पर अमल करना लगभग असंभव है। नेहरू का दर्शन चूंकि परस्पर विरोधी मूल्यों में समझौता कराने का प्रयास करता है इसलिए इसको कार्य रूप देना मुश्किल है। कुल मिलाकर देखें तो नेहरू का राष्ट्रवाद उनके समाजवाद पर हमेशा हावी रहा। उनके समझौतावादी आचरण और क्रांतिकारी दृष्टिकोण के अंतर्विरोधों के चलते सामाजिक क्रांति की संभावनाएं और भी धूमिल हो गईं।

31.2.2 सुभाष चंद्र बोस

सामाजिक परिवर्तन में सुभाष चंद्र बोस के विचार प्रखर राष्ट्रवादी भावना और व्यावहारिक राजनीति की उनकी समझ से उपजे थे। उनके विचार से राजनैतिक आजादी की लड़ाई का उद्देश्य जनसाधारण की आर्थिक और सामाजिक मुक्ति होनी चाहिए। उनका मानना था कि स्वतंत्र भारत में पूंजीपतियों और जमींदारों के निहित स्वार्थों की बजाय मज़दूरों और किसानों के हितों का पक्षधर होगा। बोस जमींदारी उन्मूलन, जमीन के न्यायपूर्ण पुनर्वितरण और नियोजित एवं एक समान लगान के हिमायती थे। विकास के मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाले पूंजीवादी रास्ते के वे विरोधी थे और समाजवाद की क्रांतिकारी विचारधारा के समर्थक। लेकिन आध्यात्मिक पृष्ठभूमि, विवेकानंद के प्रभावों और व्यावहारिक राजनीति की अपनी समझ के चलते, भौतिकवाद और वर्ग-संघर्ष के मूल्यों पर आधारित समाजवाद के मार्क्सवादी स्वरूप को उन्होंने कभी अंगीकार नहीं किया। इसीलिए अन्याय और शोषण के खिलाफ समाजवाद की प्रतिबद्धताओं के प्रति आकर्षित होने के बावजूद वे समाजवादी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मार्क्सवादी रणनीति के हिमायती नहीं थे।

उग्र राष्ट्रवादी भावनाओं के चलते बोस का वैचारिक परिवेश संकीर्ण होता गया। राष्ट्रवादी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वे शीघ्र और प्रभावी परिणाम देने वाले छोटे रास्ते की तलाश में

लग गए। राजनीति में व्यवहारवाद पर ज्यादा जोर देने की वजह से ही उन्होंने केंद्रीकृत राज्य-नियंत्रण और सैन्यवाद पर आधारित फासीवादी विचारधारा से हाथ मिलाया। मार्क्सवाद के समतावादी मूल्यों और फासीवाद के उग्र राष्ट्रवाद, अनुशासन और राज्य के कड़े नियंत्रण के सिद्धांतों का समन्वय, सामाजिक परिवर्तन का सबसे छोटा रास्ता है। इस मामले में बोस के विचार नेहरू एवं अन्य समाजवादियों से भिन्न थे जो फासीवाद के अमानवीय कृत्यों के प्रखर विरोधी थे।

बोस ने लेकिन स्पष्ट नहीं किया कि फासीवाद और मार्क्सवाद के परस्पर विरोधी विचारों का समन्वय कैसे किया जाएगा? फासीवाद मूलतः पूंजीवादी निहित स्वार्थों की कवच है और मार्क्सवाद पूंजीवाद का प्रबल विरोधी। परिणामस्वरूप अपने राष्ट्रवादी वैचारिक दृष्टिकोण के चलते बोस सामाजिक क्रांति की कोई साफ समझ विकसित करने में असफल रहे।

31.2.3 समाजवादी

राष्ट्रीय आंदोलन में समाजवादी धारा का प्रतिनिधित्व, प्रमुख रूप से आचार्य नरेंद्र देव, जय प्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया जैसे चिंतक करते हैं। 1934 में इन लोगों ने कांग्रेस के अन्दर ही कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी का निर्माण किया और अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण ये कांग्रेस के वाम-पक्ष के नाम से जाने जाते थे। नेहरू की ही तरह कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी भी केंद्रीकृत पार्टी तंत्र के लेनिन के विचारों से सहमत नहीं थी।

राष्ट्रवाद कांग्रेस सोशलिस्ट का प्रमुख सरोकार था और वे सहयोग और जनतांत्रिक विकेंद्रीकरण के सिद्धांतों पर एक ऐसी समाजवादी व्यवस्था के हिमायती थे जो सामाजिक न्याय और समानता के मूल्यों पर आधारित हो। विकास के लिए पूंजीवादी औद्योगिकरण की तुलना में ये ग्रामीण और कुटीर उद्योग के हिमायती थे। कांग्रेस सोशलिस्टों का मानना था कि गांव को आधार मानकर लघु उद्योगों के माध्यम से देश का बेहतर आर्थिक विकास हो सकता है। समाजवादी चिंतक भारत के विकास और सामाजिक परिवर्तन में कृषि की भूमिका को प्रमुख मानते थे। नेहरू के औद्योगीकरण और नियोजित-अर्थनीति के माध्यम से भारत के आधुनिकीकरण के विचारों के वे विरोधी थे।

कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी, जो भारत में समाजवाद की इस धारा का प्रतिनिधित्व करती है, धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों की हिमायती थी और छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियों का प्रखर रूप से विरोध करती थी। वह एक नैतिक और मानवतावादी समाजवाद की स्थापना करना चाहती थी। समाजवादी चिंतक भी सामाजिक क्रांति की दिशा में कोई महत्वपूर्ण योगदान इसलिए नहीं कर पाए क्योंकि वे असमान ऐतिहासिक परिस्थितियों में और सामाजिक सद्भावना के जरिए परिवर्तन चाहते थे। सहयोग की भावना और ग्रामीण विकास कार्यक्रम या विकेंद्रीकरण की योजनाएं भारत में सामाजिक क्रांति की दिशा में कोई महत्वपूर्ण योगदान करने में असफल रहे हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दी गई जगह का प्रयोग करें।
ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से अपने उत्तरों का मिलान करें।

1) नेहरू ने मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था या समाजवाद के सोवियत स्वरूप में किसी को नहीं स्वीकार किया, क्यों?

.....

.....

.....

.....

2) भारत में सामाजिक क्रांति के बारे में समाजवादियों के विचारों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

31.3 मार्क्सवाद, समाजवाद और सामाजिक क्रांति : एक अवलोकन

स्वतंत्रता आंदोलन की एक और धारा मार्क्सवादी समाजवादियों की थी। कई मुद्दों पर समाजवादी विचार के राष्ट्रवादियों से उनके मतभेद थे। सामाजिक क्रांति के उनके विचार प्रमुख रूप से मार्क्सवाद के सिद्धांतों और 1917 की रूसी क्रांति पर आधारित थे। उनके विचार में चिंतन का राष्ट्रवादी ढांचा असमानता, शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने में असमर्थ था इसलिए वे नेहरू, नरेंद्र देव, जय प्रकाश नारायण आदि राष्ट्रवादियों द्वारा सुझाए गए रास्ते से असहमत थे। वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें राजनैतिक सत्ता मज़दूरों और किसानों के हाथ में हो। सामाजिक क्रांति के लिए मार्क्सवादी रास्ते के हिमायती थे। सामाजिक परिवर्तन की इस धारा का प्रतिनिधित्व भारत की कम्युनिस्ट पार्टी, वरकर्स एंड पीजेंट्स पार्टी एवं मार्क्सवाद में आस्था व्यक्त करने वाले अन्य संगठन करते हैं, जिनमें एम.एन. रॉय और उनके अनुयायी प्रमुख हैं। गौर तलब है कि लंबे समय तक राय भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख विचारक और नेता थे। 1928 में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से निष्कासन के बाद वे और उनके अनुयायी कम्युनिस्ट पार्टी और संबद्ध अन्य मज़दूर संगठनों से अलग हो गए।

31.3.1 कम्युनिस्ट

कम्युनिस्टों द्वारा अग्रसारित, सामाजिक क्रांति की वैकल्पिक रणनीति राष्ट्रवादी समाजवादियों के विचारों की आलोचना और मूल्यांकन पर आधारित थी। राष्ट्रवादी समाजवादियों की ही तरह वे भी हिंदू पुनरुत्थानवादी और छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरोधी थे लेकिन उनका मानना था कि समाज के परंपरागत ढांचे को पूरी तरह तोड़े बिना भारत में सामाजिक क्रांति संभव नहीं थी। शोषण से मुक्ति, समानता, न्याय और स्वतंत्रता जैसे समाजवादी उद्देश्यों की प्राप्ति, नेहरू, बोस और कांग्रेस सोसलिस्टों के मध्यवर्गीय नेतृत्व में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से संभव नहीं थी। वे राष्ट्रवादियों के प्रतिद्वंद्वी समूहों में आपसी सहयोग और सामंजस्य द्वारा सामाजिक क्रांति के विचारों से भी असहमत थे। वे भारत में मौजूद गैर-बराबरी की विषम परिस्थितियों में इस तरह के सहयोग और सद्भावना की बातों को अव्यावहारिक मानते थे। उनकी रॉय में राष्ट्रवाद चूंकि निहित स्वार्थों की रक्षा का विधान है इसलिए राष्ट्रवादी ढांचे में कोई भी सामाजिक परिवर्तन हो ही नहीं सकता।

इन विचारों से प्रेरित भारतीय कम्युनिस्टों ने सामाजिक क्रांति की एक वैकल्पिक समझ विकसित की। यह समझ वर्ग-संघर्ष की समझ थी जो राष्ट्रवादी समझ से बिल्कुल भिन्न थी। इस समझ के अनुसार आम आदमी की हालत तभी सुधर सकती है जबकि क्रांति का नेतृत्व मज़दूरों और किसानों के हाथों में हो। सहयोग और सामंजस्य की विचारधारा के विरुद्ध वे हिंसक क्रांति द्वारा सामाजिक परिवर्तन करना चाहते थे जिसमें मध्य वर्ग समेत धनी वर्गों को जबरन सत्ताच्युत कर दिया जाएगा। उनके विचार प्रमुख रूप से 1917 की रूसी क्रांति के मूल्यों से प्रभावित थे।

अपने क्रांतिकारी तेवर के बावजूद तमाम कारणों से सामाजिक क्रांति की यह समझ भी कारगर नहीं हो सकी। राष्ट्रवादी भावना लोगों के दिल में इस कदर बैठी थी कि कम्युनिस्टों द्वारा राष्ट्रवाद की प्रखर आलोचना भी उसे कम न कर सकी उल्टे इससे कम्युनिस्टों की प्रतिष्ठा ही गिरी। गांधी, बोस, नेहरू जैसे नेताओं को साम्राज्यवादी और पूंजीवादी दलाल के रूप में प्रचारित करने से भारत के कम्युनिस्ट राजनैतिक क्षितिज की मुख्यधारा से कटकर अलग-थलग पड़ गए। दूसरा प्रमुख कारण यह था कि यहां के कम्युनिस्ट रूसी क्रांति के ही ढर्रे पर भारत में भी क्रांतिकारी आंदोलन चलाना चाहते थे जबकि दोनों जगहों की भौतिक वस्तुस्थिति में मौलिक फर्क थे। तीसरा कारण यह था कि कम्युनिस्टों ने मज़दूरों और किसानों की क्रांतिकारी क्षमताओं और संभावनाओं का अतिरंजित मूल्यांकन किया। कुल मिलाकर कम्युनिस्टों का सामाजिक क्रांति का परिप्रेक्ष्य मशीनी और वास्तविकता से बेखबर था और इन्हीं कारणों से सामाजिक क्रांति का उनका दृष्टिकोण अव्यवहारिक साबित हुआ।

31.3.2 एम. एन रॉय

एम. एन. रॉय भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन शुरू करने वालों में थे और सामाजिक परिवर्तन की क्रांतिकारी समझ विकसित करने वाले पहले मार्क्सवादी चिंतक थे। रॉय की

समझ राष्ट्रवादी समझ से मेल नहीं खाती थी। शुरू में रॉय राष्ट्रीय आंदोलन को आंदोलन मानते थे और भारतीय राष्ट्रवाद को समुदायिक शक्ति। उनकी राय में भारत की मुक्ति मज़दूर वर्ग के नेतृत्व में समाजवादी क्रांति से ही संभव थी। राष्ट्रवाद के प्रखर विरोधी होने के कारण उन्होंने गांधी और नेहरू जैसे राष्ट्रवादी नेताओं की तीव्र आलोचना की।

रॉय भारत में समाजवादी क्रांति के प्रति अत्यधिक आशावादी थे। उनकी इस आशावादिता के पीछे भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया की उनकी समझ थी। उनकी समझ से औपनिवेशिक राज्य की जरूरतों के चलते औद्योगीकरण की प्रक्रिया से क्रांतिकारी संभावनाओं से परिपूर्ण एक सशक्त मज़दूर वर्ग का उदय हो चुका था और क्रांति के लिए तैयार था। 1920 के दशक के औद्योगीकरण की गति और मज़दूरों के सशक्त वर्ग के रूप में उदय की उनकी अतिरंजित समझ से पता चलता है कि यूरोप से भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का संचालन करने वाले रॉय वस्तुगत यथार्थ से कटे हुए थे। भारत के औद्योगीकरण में औपनिवेशिक शासन की कोई रुचि नहीं थी।

कार्मिन्टर्न से निष्कासन के बाद एम.एन. रॉय भारत लौट आए और उसी के साथ उनके चिंतन का दूसरा चरण शुरू हुआ। रॉय ने मार्क्सवाद की नए परिप्रेक्ष्य में व्याख्या और "क्रांतिकारी मानवतावाद" के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस चरण में भी राष्ट्रवाद के प्रति उनका आलोचनात्मक दृष्टिकोण बरकरार रहा और शायद इसी कारण कांग्रेस से उनकी दूरी बनी रही। अब रॉय के लिए मार्क्सवाद सशस्त्र क्रांति का राजनैतिक उपकरण मात्र नहीं था। उन्होंने भारत में सामाजिक क्रांति के लिए एक नई नैतिक चेतना की जरूरत पर जोर देना शुरू किया। उनके विचार से लोगों को नैतिक चेतना से लैस किए बिना कोई भी सामाजिक क्रांति असंभव थी। उनका मानवतावाद अमूर्त था और शायद इसलिए भारत में सामाजिक क्रांति में कोई सार्थक योगदान नहीं कर सका। उन्होंने जनता के बदले व्यक्तित्व के महत्व पर जोर देना शुरू किया। राजनैतिक सक्रियता छोड़कर वे अमूर्त मानवतावाद की वकालत करने लगे। मानवतावाद की अमूर्तता की अव्यवहारिकता के कारण रॉय के विचार भी सामाजिक क्रांति की दिशा में कोई महत्वपूर्ण योगदान करने में असफल रहे।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दी गई जगह का प्रयोग करें।
ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से अपने उत्तरों का मिलान करें।

1) कम्युनिस्टों द्वारा राष्ट्रवाद की आलोचना के कारण बताइए।

.....
.....
.....
.....

2) कम्युनिस्टों द्वारा प्रस्तावित सामाजिक क्रांति की वैकल्पिक समझ क्या थी?

.....
.....
.....
.....

3) कम्युनिस्टों द्वारा प्रस्तावित विकल्प की सीमाएं क्या थीं?

.....
.....
.....
.....

4) शुरुआती दौर में सामाजिक क्रांति के बारे में मानवेंद्र नाथ रॉय का क्या नज़रिया था?

.....

.....

.....

.....

5) क्रांतिकारी मानवतावादी के रूप में, क्या रॉय भारत में सामाजिक क्रांति का कोई संतोषजनक हल खोज सके?

.....

.....

.....

.....

31.4 सारांश

इस इकाई में भारत में सामाजिक क्रांति के मुद्दे पर समाजवादी रुझान के राष्ट्रवादियों और मार्क्सवादियों के दृष्टिकोणों के मूल्यांकन का प्रयास किया गया है। हिन्दू पुनरुत्थान, अंग्रेजी उपनिवेशवाद और पूंजीवादी मुक्त-बाजार अर्थव्यवस्था के दोनों ही विरोधी थे और समाजवादी मूल्यों के पक्षधर। उनके मतभेद मुख्य रूप से राष्ट्रवा की समझ को लेकर थे। राष्ट्रवादी राष्ट्रीय मुक्ति को वरीयता क्रम में ऊपर रखते थे जबकि कम्युनिस्ट, राष्ट्रवाद को सामाजिक क्रांति की तुलना में गौण मानते थे। उनका मानना था कि राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य में कोई सार्थक सामाजिक क्रांति नहीं हो सकती। वर्ग संघर्ष पर जोर देते हुए कई बार कम्युनिस्टों ने राष्ट्रवाद और सामाजिक क्रांति को परस्पर विरोधी बताया और परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा से अलग-थलग पड़ गए।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दी गई जगह का प्रयोग करें।
ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से अपने उत्तरों का मिलान करें।

1) समाजवादी रुझान के राष्ट्रवादियों और मार्क्सवादियों के विचारों में क्या समानताएं थीं?

.....

.....

.....

.....

2) उनके प्रमुख मतभेद क्या थे?

.....

.....

.....

.....

3) ऐसा क्यों हुआ कि सामाजिक क्रांति की राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी समझें अव्यवहारिक साबित हुईं?

.....

.....

.....

.....

31.5 शब्दावली

फासीवाद : संकटग्रस्त मुक्त-बाजार व्यवस्था की रक्षा के लिए हिंसा और आतंक पर आधारित विचारधारा।

मुक्त-बाजार व्यवस्था : इसे पूंजीवाद भी कहते हैं। इसमें स्वतंत्र विनिमय के नाम पर बाजार में विनिमय के नियम उत्पादन साधनों पर काबिज पूंजीपति वर्ग करता है।

पुनरुत्थानवाद : हिंदू धार्मिक परंपराओं का गौरव-गान करने वाली विचारधारा।

31.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

चंद्र, बिपन एवं अन्य, 1972, *फ्रीडम स्ट्रगल,* नई दिल्ली

चंद्र बिपन एवं अन्य, 1988, *इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेस : 1857-1947,* नई दिल्ली

देसाई, ए.आर, 1976, *सोशियल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज़्म,* बंबई.

सरकार, सुमित, *माडर्न इंडिया : 1885-1947,* मद्रास

वर्मा, वी.पी., 1980, *माडर्न पालिटिकल थॉट,* आगरा।

31.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें 31.2.1
2) देखें 31.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें 31.3.1
2) देखें 31.3.1
3) देखें 31.3.1
4) देखें 31.3.2
5) देखें 31.3.2

बोध प्रश्न 3

1) देखें 31.4
2) देखें 31.4